2 दिसम्बर 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 17 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं 170 तीर्थंकर महामण्डल विधान संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ विश्वप्रसिद्ध श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर (श्री छदामीलाल जैन ट्रस्ट) में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 28 नवम्बर तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं 170 तीर्थंकर महामण्डल विधान आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. योगेशचन्दजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. अरविन्दकुमारजी करहल, पण्डित अजीतजी फिरोजाबाद आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त पण्डित प्रकाशचन्दजी ज्योतिषाचार्य मैनपुरी, प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी जैन फिरोजाबाद, पण्डित रतनचंदजी चौधरी कोटा, पण्डित विनीतकुमारजी आगरा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित अनन्तवीरजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित अनाकुलजी जैन जसवंतनगर, पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी आदि विद्वानों का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त रात्रि में प्रवचनोपरान्त अनेक ज्ञानवर्धक व आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के दौरान दिनांक 23 नवम्बर को श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा का उनके द्वारा किए जा रहे समाजोत्थान के महत्वपूर्ण योगदान के लिए सार्वजनिक अभिनन्दन एवं दिनांक 24 नवम्बर को 'क्रमबद्धपर्याय' विषय पर एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अनेक वर्षों के पश्चात् यहाँ आध्यात्मिक शिविर के माध्यम से तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार हुआ, जिसमें सैंकड़ों साधर्मियों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक पूजन-विधान, प्रवचनों, कक्षाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मलाभ लिया। शिविर में लगभग 50 हजार रूपये का सत्साहित्य एवं 25 हजार घंटों के सी.डी. व डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रमोदकुमार जैन डी.डी. ग्रुप, जलेसर, विधान आमंत्रणकर्त्ता श्री रुनक जैन छोटी छपैटी ठकुरिया परिवार फिरोजाबाद

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 10 से 17 नवम्बर तक रमणीकभाई सावला स्वाध्याय परिवार की ओर से लघुतत्त्वस्फोट मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात:काल लघुतत्त्वस्फोट के विशेष छंदों पर एवं सायंकाल अष्टपाहुड पर तथा ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल लघुतत्त्वस्फोट के पद्यानुवाद का पाठ किया गया।

(2) मुम्बई : यहाँ कार्तिक माह में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर **सीमंधर जिनालय** में पण्डित अभिषेकजी जैन गजपंथा, **मलाड (ईस्ट)** में पण्डित अश्विनभाई शाह, **भायंदर** में पण्डित सौरभजी जैन वसई, **दादर** में पण्डित नन्हेलालजी जैन सागर, **मलाड (वेस्ट)** में पण्डित विपिनजी जैन एवं **दहीसर** में पण्डित अनिलभाई शाह दहीसर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

चैत्यालय एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दि. जैन मुमुक्षु ट्रस्ट, नेमिनाथ जैन कॉलोनी के तत्त्वावधान में श्री शांतिनाथ दि. जिन चैत्यालय एवं आचार्य कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का निर्माण कराया जा रहा है, जिसका शिलान्यास समारोह दिनांक 31 अक्टूबर को डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा कराया गया।

इस अवसर पर डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा 'जिनमंदिर व स्वाध्याय भवन की महत्ता' विषय पर प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम का शुभारंभ जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा से हुआ। तत्पश्चात् ध्वजारोहण, पूजन, प्रवचन, समारोह सभा व शिलान्यास के कार्यक्रम हुये। समारोह के अध्यक्ष श्री कस्तूरचंदजी श्यामजी सिंघवी, मुख्य अतिथि श्री भागचंदजी कालिका तथा विशिष्ट अतिथि श्री भंवरलालजी भोरावत मुम्बई, श्री महावीरजी पंचोली अहमदाबाद थे। ध्वजारोहण श्री सागरमलजी सिंघवी (पूर्व आकाशवाणी निदेशक) ने एवं मंगलाचरण श्री हितंकर जैन ने किया।

वेदी का शिलान्यास श्री भंवरलालजी एवं शांतिलालजी अखावत

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

सम्पादकीय –

माँ और सरस्वती माँ

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

विराग धर्म का पिपासु और जिज्ञासु तो है ही। उसे जहाँ भी धर्म की बात पढ़ने-सुनने को मिलती, वह उसे न केवल पढ़ता-सुनता; बल्कि उस पर गहराई से विचार भी करता।

एक बार उसने विष्णु शर्मा द्वारा लिखी गई पंचतंत्र पुस्तक में एक श्लोक पढ़ा था –

''तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुत्योर्विभिन्नः, नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणं।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुफायां, महाजनो येन गता स पंथः।।

इसका अर्थ यह है कि पृथ्वी बहुत बड़ी है, परस्पर विरुद्ध कथन करनेवाले मुनिगण अनेक हैं, धर्म का तत्त्व मानो किसी गुफा में मुंह छुपाकर बैठ गया है, अतः अब तो जिस मार्ग से महापुरुष चलें वही धर्म का पंथ है।''

इस संदर्भ में विराग विचार करता है कि ''वर्तमान विश्व के लगभग छह अरब आदमियों में शायद ही कोई ऐसा हो जो किसी न किसी रूप में धर्म को न मानता हो। सभी व्यक्ति अपनी-अपनी समझ एवं श्रद्धा के अनुसार धर्म को मानते ही हैं।

इस दृष्टिकोण से देखें तो सभी व्यक्ति धर्मात्मा है और सभी स्वयं को धर्मात्मा मानते भी हैं। धार्मिक आस्था के कारण पापी से पापी व्यक्ति भी पाप करने के पहले परमात्मा को जरूर याद करता है। यह तो पता नहीं कि वह कैसा धर्मात्मा है? जो परमात्मा को सर्वज्ञ मानता है, फिर भी उन्हीं के सामने खुलकर पाप करता है; जबकि एक साधारण पुत्र पिता के सामने बीड़ी-सिगरेट पीने से भी डरता है। क्या दुनिया में ऐसा भी कोई भगवान है जो पाप करने वाले की भी मदद करता है? खैर! जो भी हो, परन्तु वे नाम से तो धर्मात्मा हैं ही; क्योंकि वे किसी न किसी रूप में धर्म को तो मानते ही हैं न?''

विराग आगे सोचता है कि उपर्युक्त संदर्भ में एक बात यह भी विचारणीय है कि 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्नः' इस सत्य सूक्ति के अनुसार सारी दुनिया में जितने व्यक्ति हैं, उनमें सबके विचार भिन्न-भिन्न होते हैं, एक दूसरे के विचार परस्पर में एक-दूसरे से कभी नहीं मिलते। उनमें सम्पूर्ण रूप से समानता संभव ही नहीं है, क्योंकि प्रकृति से ही सबके सोचने का स्तर एवं उनके ज्ञान का स्तर समान नहीं होता।

इसी ध्रुव सत्य का प्रतिपादन करते हुए कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं-

''हैं जीव नाना कर्म नाना लब्धि नानाविध कही।
अतएव ही निज-पर समय के साथ वर्जित बाद भी।।[१]

१. नियमसार गाथा १५६ का पद्यानुवाद 'युगल'।

जगत में जीव नाना प्रकार के हैं, उनके कर्मों का उदय भी भिन्न-भिन्न प्रकार का है, उनके सबके ज्ञान का विकास भी एक जैसा नहीं है। अतः विचार भी एक जैसे नहीं हो सकते हैं।

यही कारण है कि जितने व्यक्ति, जितने वर्ग, जितनी जातियाँ, जितने उनके कर्म, उतने ही बन गये धर्म। इतना ही नहीं, एक ही व्यक्ति नोटों और वोटों के चक्कर में मानव सेवा-धर्म आदि अनेक नकली धर्म खड़े करके मानव का पोषण करने के बजाय उनका शोषण करता है। इस तरह धर्म का मूल स्वरूप ही गायब हो गया, बदल गया।

इन्हीं सब कारणों से मैं ही क्या, सम्पूर्ण शिक्षित युवा जगत धर्म के संबंध में किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो रहा है। अतः जिसकी समझ में परम्परागत पूर्वाग्रहों वश जो बात जम गई, वही उसका धर्म बन गया।

इतना ही नहीं, मनःस्थिति तो यहाँ तक आ पहुँची है कि धर्म के नाम पर जो जैसा धर्माचरण करता है, वह उसे ही सही धर्म का स्वरूप समझता है और दूसरों से भी वही/वैसा ही धर्माचरण करने की अपेक्षा रखता है, अन्यथा अपने को धर्मात्मा और अन्यों को अधर्मात्मा घोषित करता रहता है, जबकि धर्म के वास्तविक स्वरूप से वह स्वयं भी अभी अनजान है।

विराग ने माँ से कहा – 'मैंने एक बार यह सुना था कि धर्म तो वस्तु का स्वरूप है और वस्तु का स्वरूप बनाया नहीं जाता। वह तो अनादि-अनन्त-त्रिकाल आग की उष्णता और पानी की शीतलता की भाँति एकरूप ही होता है।

त्रिकाली स्वभाव सदा एकरूप ही रहता है, उसे पाने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता, बल्कि करना बंद करना पड़ता है अर्थात् अनादिकाल से वस्तु स्वरूप के अज्ञान के कारण जो हमारी परद्रव्य में कर्तृत्व बुद्धि है, उसे छोड़ना पड़ता है। जिस तरह पानी का स्वभाव ठंडा है उसे ठंडा रखने के लिए और आग का स्वभाव उष्ण है उसे उष्ण रखने के लिए क्या करना पड़ता है? कुछ भी नहीं। इसी तरह आत्मा का स्वभाव जानना है, समता है, क्षमा है तो जानने के लिए और सहज समता रखने के लिए क्या करना पड़ता है, कुछ भी नहीं।''

माँ ने कहा – ''बेटा ! तूने यह जो सुना-समझा है, बिल्कुल सही है।

जिस तरह आग का स्वभाव उष्ण है, उसी तरह आत्मा का स्वभाव जानना है; क्षमा, निरभिमान, निष्कपट तथा निर्लोभ है। ये ही आत्मा के धर्म हैं।

जगत में भी ऐसा कोई मजहब, सम्प्रदाय और जातिगत धर्म नहीं है जो क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि तथा अहिंसा-सत्य, अचौर्य,

ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह को धर्म नहीं मानता हो तथा क्रोध-मान-माया-लोभ और मोह-राग-द्वेष तथा हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह को अधर्म न मानता हो। वस्तुतः ये ही धर्म/अधर्म हैं।''

यह सब सुनकर और उनके अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं प्रवचन आदि को देखकर विराग को ऐसा लगा कि ''माँ को धार्मिक ज्ञान बहुत है। मैं धर्म का स्वरूप समझने के लिए अपनी माँ को ही गुरु बना लूँ? माँ से बढ़कर अभी और कोई ज्ञानी-ध्यानी और विरागी नजर भी तो नहीं आता। माँ घर में रहकर भी गृह विरत हैं, निरंतर स्व-पर कल्याण में संलग्न है। माँ धर्मध्यान की धुन में इतनी मग्न रहती है कि धर्म चर्चा-वार्ता के सिवाय अन्यत्र उसका मन लगता ही नहीं है। अतः मैं अन्य लोगों की भाँति यह गलती नहीं करूँगा कि **'घर में आये नाग न पूजें बामी पूजन जाँय'** यह तो मेरा परम सौभाग्य ही है कि वे मेरी माँ भी है और सरस्वती माँ भी।''

ऐसा विचार कर उसने निश्चय कर लिया कि ''मैं कल से प्रतिदिन प्रातः और शाम को एक-एक घंटे माँ के प्रवचनों में अवश्य बैठूँगा।''

अब वह अपनी माँ को माँ के रूप में कम और साक्षात् सरस्वती माँ के रूप में अधिक देखने लगा और भारी श्रद्धा भक्ति से उनके प्रवचनों को बड़े ध्यान से सुनने लगा एवं समझने की कोशिश करने लगा।

विराग ने सोचा - ''जब तक वक्ता के प्रति श्रोता की ऐसी श्रद्धा भक्ति नहीं होगी और सम्पूर्ण समर्पण नहीं होगा एवं उनके प्रवचनों को ध्यान से नहीं सुनेगा तब तक उसे तत्त्वज्ञान का लाभ नहीं होगा।'' यही सोचकर विराग और चेतना ने माँ को गुरु जैसा बहुमान दिया।

एक दिन विराग ने माँ से अत्यन्त विनयपूर्वक निवेदन किया कि - ''माँ! धर्माचरण तो मैं आपकी प्रेरणा से बचपन से ही कर रहा हूँ, परन्तु उससे धन-वैभव आदि परपदार्थों के प्रति मेरा आकर्षण एवं ममत्व कम नहीं हुआ, क्रोधादि कषायें यथावत हैं, विषय-वासना की प्रवृत्ति भी पूर्ववत ही है, अतः मैं वह धर्म समझना चाहता हूँ जिससे इन सबसे मुक्ति मिले; क्योंकि इनके कारण आकुलता बनी ही रहती है, जबकि धर्म का फल तो निराकुलता है - ऐसा मैंने छहढाला आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों में पढ़ा है।''

विराग की गंभीर और महत्वपूर्ण समस्या के समाधान के रूप में माँ समताश्री ने धर्ममहल की नींव के पत्थर के रूप में वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त को समझाते हुए प्रवचन में कहा -

''वर्तमान में मान्य 'विश्व' का स्वरूप मात्र उन कुछ देशों, द्वीपों तक ही मर्यादित है, सीमित है, जहाँ मानव जाति निवास करती है; जबकि वास्तविक विश्व का स्वरूप शास्त्रीय परिभाषा के अन्तर्गत 'छह द्रव्यों के समूह को कहा है। उन छह द्रव्यों में जीव अनन्त हैं, पुद्‌गल अनन्तानन्त है; धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य और आकाश द्रव्य एक-एक हैं तथा काल द्रव्य असंख्य हैं। इन अनादि-अनंत स्वतंत्र, स्वाधीन स्वावलम्बी स्वसंचालित द्रव्यों में जो अनन्त जीव द्रव्य हैं, उनमें हम भी एक द्रव्य हैं। इस कारण हममें भी उपर्युक्त सभी विशेषतायें घटित होती हैं अर्थात् हम भी अनादि-अनन्त, सम्पूर्ण रूप से स्वाधीन-स्वतंत्र, स्वावलम्बी हैं, किन्तु हम अपने इस मौलिक स्वरूप से अपरिचित हैं, अनभिज्ञ हैं, इस कारण जो स्वाभाविक कार्य-कारण व्यवस्था है, सहज-निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध हैं, उन्हें वैसा न मानकर उनमें अपना एकत्व एवं कर्तृत्व मान लेते हैं, हर्ष-विषाद करते हैं, सुखी-दुःखी होते हैं और राग-द्वेष में पड़कर अपना संसार बढ़ाते हैं।''

माँ ने आगे कहा - ''छह द्रव्य के समूह रूप त्रिलोकव्यापी अनादि-अनन्त स्व-संचालित विश्व के स्वतंत्र अस्तित्व का परिचायक 'वस्तुस्वातंत्र्य' का सिद्धान्त है, जो कि स्वाभाविक कार्य-कारण व्यवस्था और सहज निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध का मूल आधार है।

यह सिद्धान्त ही हमें सम्पूर्ण रूप से स्वावलम्बी बना सकता है; क्योंकि विश्व का कण-कण सम्पूर्णतः परनिरपेक्ष, स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वसंचालित एवं स्वावलम्बी है। उसे अपने अस्तित्व के लिए एवं परिणमन के लिए रंचमात्र भी पर के सहयोग की आवश्यकता नहीं है।''

प्रवचन के बीच में ही विराग बोला - ''यदि यह बात मैं पहले ही सुन/समझ लेता तो इतनी देर नहीं होती। जीवन का बहुभाग समय धर्म के नाम पर यों ही चला गया।''

माँ ने समाधान करते हुए कहा - ''देर होती कैसे नहीं, प्रत्येक कार्य होने का अपना स्वकाल होता है, पर्यायगत योग्यता होती है जो काम जब होना होता है, तभी होता है, जिस उद्यम पूर्वक होना होता है, वैसा उद्यम भी उससमय अपनी तत्समय की योग्यता से होता है। जैसी होनहार होती है तदनुसार होता है, जिन निमित्त कारणों की उपस्थिति में होना होता है, वे सब कारण कलाप एक साथ सहज में मिलते चले जाते हैं, उसमें हमें, तुम्हें किसी को भी कुछ भी तो नहीं करना है'' - यह चर्चा करते हुए माँ ने काल पर बहुत जोर दिया। तथा 'काल' का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि - ''काल का अर्थ तत्समय की योग्यता ही है। इस हिसाब से तुम्हारी वस्तु स्वातंत्र्य की समझ का यही काल था, देर कहाँ हुई। शास्त्रीय शब्दों में कार्य के सम्पन्न होने की प्रक्रिया को पाँच समवायरूप कहा गया है - वे इसप्रकार हैं - स्वभाव,

पुरुषार्थ, होनहार, काललब्धि और निमित्त। कार्य निष्पन्न होने में ये पाँचों कारण मिलते ही मिलते हैं। ऐसा ही वस्तु स्वरूप है और यह सब प्रक्रिया ऑटोमेटिक सम्पन्न होती है, इसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता।''

विराग को यह सब जानकर भारी संतोष हुआ। उसने कहा - ''माँ श्री मुझे अभी इस वस्तुस्वातंत्र्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानना है? एक सबसे अहं प्रश्न तो यह है कि - 'वस्तु स्वातंत्र्य' को स्वीकार करने पर फिर अहिंसा/हिंसा करने, न करने के उपदेश का क्या होगा? इस विषय में जितना सोचता हूँ, उतना ही उलझता जाता है, और सोचता हूँ कि धर्म के नाम पर जो अबतक किया, क्या वह सब भ्रम था। क्या मेरे साथ वह कहावत ही चरितार्थ हुई कि 'खोदा पहाड़ और निकली चुहिया और वह भी मरी हुई।' सचमुच ऐसा लगता है कि अब तक धर्म के नाम पर किया गया सारा श्रम व्यर्थ ही गया।''

माँ ने कहा - ''आज का समय समाप्त हुआ, शेष चर्चा कल करेंगे। सभा विसर्जित हुई, सभी कल की प्रतीक्षा में अपने-अपने घर चले गये। •

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2013 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें -

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष - 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र-पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 10 अध्याय)
2. नयचक्र-उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2014

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 26 जनवरी 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 27 जनवरी 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 28 जनवरी 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक - परीक्षा बोर्ड)

समयसार-तात्पर्यवृत्ति (मराठी) का विमोचन सम्पन्न

कारंजा (महा.) : यहाँ श्री महावीर ब्रम्हचर्याश्रम जैन गुरुकुल में रविवार दिनांक 24 नवमबर 2013 को समयसार ग्रन्थाधिराज की आचार्य जयसेनकृत तात्पर्यवृत्ति टीका का पण्डित धन्यकुमारजी भोरे द्वारा मराठी में अनुवादित ग्रंथ का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्री महावीर ज्ञानोपासना समिति के अध्यक्ष प्रो. कीर्तिकुमारजी भोरे ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अशोकजी जैन रुडकी, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, श्रीमान बापूसाहेब पाटील ठाणे, परमेष्ठीभाई गांधी नातेपुते, प्रियदर्शनजी जैन नागपुर, अभयसावजी चवरे अकोला, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र में आयोजित परिसंवाद में प्रो. कल्पना मुळावकर अंबेजोगाई, देवकुमारजी कान्हेड एलोरा आदिकुमारजी बंड मुम्बई, बापूसाहेबजी पाटील ठाणे, विदुषी विजयाताई भिसीकर कारंजा आदि वक्ताओं ने गुरुकुल परम्परा व आचार्य समन्तभद्र महाराज के कार्यो पर अपने विचार व्यक्त किये।

प्रथम सत्र का संचालन श्रीमती लीना चवरे व द्वितीय सत्र का संचालन पण्डित आलोकजी शास्त्री ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में देश के अनेक नगरों से पधारे गणमान्य अतिथि व समाज के विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

(पृष्ठ 7 का शेष...)

उक्त पंक्तियों में यह कहा गया है कि हे सिद्ध भगवन् ! आप भव्यरूपी कुमुदों को खिलानेवाले **चन्द्रमा** हो और तीन लोकरूपी कमलों को प्रफुल्लित करनेवाले **सूर्य** हो। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 1 का शेष...) (उदयपुर समाचार)

परिवार द्वारा एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री महावीरजी कुणावत परिवार अहमदाबाद, श्री रंगलालजी मेहता परिवार, श्री झमकलालजी जैन परिवार लकडवास व श्री मांगीलालजी अखावत अहमदाबाद द्वारा किया गया। सभी शिलान्यासकर्त्ता को ट्रस्ट द्वारा प्रशस्ति-पत्र भेंट किये गये।

इसी अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक 'भक्तों की पुकार' का विमोचन श्री श्यामजी सिंघवी (सी.ए.) द्वारा किया गया। इस पुस्तक में 8 नाटक हैं, जो समाज की कुरीतियों व अंधविश्वास को दूर करने हेतु प्रेरित करते हैं।

दिनांक 30 अक्टूबर को नींव खुदाई का विधि-विधान भी डॉ. महावीर प्रसादजी शास्त्री द्वारा कराया गया। अन्त में श्री सुरेशजी अखावत द्वारा आभार व्यक्त किया गया। **- शान्तिलाल अखावत**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

(पृष्ठ 1 का शेष...) (फिरोजाबाद समाचार)

एवं ध्वजारोहणकर्त्ता श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा थे। विधान में मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्रीमती उर्मिला देवी जैन परिवार जीन, फिरोजाबाद थे। विधान-मण्डप उद्घाटनकर्त्ता श्री जवाहरलाल जैन जयपुर, शिविर उद्घाटनकर्त्ता श्री महेशचन्द्र संजीवकुमार जैन एडवोकेट परिवार फिरोजाबाद, प्रवचन-मण्डप उद्घाटनकर्त्ता सेठ महावीर प्रसादजी जैन एवं मंच उद्घाटनकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमार जैन 'अहिंसा' करहल थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं पण्डित अकलंकजी शास्त्री फिरोजाबाद के सहयोग से संपन्न हुये।

संपूर्ण कार्यक्रम के संयोजक पण्डित सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद व पण्डित विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं निर्देशक पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर व पण्डित नवीनजी शास्त्री जयपुर रहे।

निज आतम की सुधी लागी है

प्रभु आपका रूप निरख, निज आतम की सुधी लागी है,
ज्ञान की ऐसी उछाल उठे कि विकार परिणति भागी है।
प्रभु आपके निज वैभव सा तीन लोक में कहीं नहीं,
मैं भी तुम सम यही जान, पर्याय दीनता आज भगी।
अब तो नियम सहज पलते हैं, जोर नहीं कुछ भी पड़ता,
यही सत्य है, सहज परिणमन, है सिद्धांतों की दृढता।
परम उपकार जिनराज तुम्हारा, कैसा अद्भुत तत्त्व कहा,
हम मंदबुद्धि को उपदेश दिया, उपकारी मुनिराज अहा।
जिनवाणी माँ परम उपकारी, मुझे कहा भगवान है तू,
सिद्ध समान रूप है तेरा, अनंत गुणों की खान है तू।
ऐसा अद्भुत तत्त्व बताया, रतनों से झोली भर दी,
मुझे दिखाकर मेरा वैभव, पामरता मेरी हर ली।
अपना सब कुछ लेकर आया, अपना सब ले जाऊँगा,
देव-शास्त्र-गुरु का उपकार, जीवन में न भुलाऊँगा।
मैं ज्ञाता हूँ कर्त्ता नहीं, यह जीवन में अपनाऊँगा,
ज्ञान रूप मेरी काया है, हृदय पटल पधराऊँगा।
देव-शास्त्र-गुरु उपकार हृदय में आया,
खोला ज्ञान पटल, निज वैभव दिखलाया।
बाह्य स्वच्छता अरु अन्तर पवित्रता धारूँ,
निज स्वरूप निहार, पंच परम पद धारूँ।

- ज्ञाता सिंघई, सिवनी

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें दिनांक 26, 27 व 28 जनवरी 2014 को आयोजित की जावेगी।

जिन परीक्षा केन्द्रों ने छात्र प्रवेशफार्म भरकर अभी तक नहीं भेजे हैं, वे तत्काल परीक्षाबोर्ड कार्यालय को भेज देवें। **- ओ.पी. आचार्य**

सिद्धभक्ति

10 चतुर्थ पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रश्न – श्रीपाल व मैना सुन्दरी भविष्य के भगवान तो थे ही और आज तो वे सिद्ध अवस्था में ही हैं।

उत्तर – बात तो तुम ठीक कहते हो; पर सिद्ध अवस्था के रूप में तो वे सब सिद्धों में शामिल ही हैं।

प्रश्न – पर, उनका नाम तो कहीं नहीं आता।

उत्तर – सिद्ध-अवस्था में किसी का कोई नाम होता ही नहीं है; सभी को **सिद्ध भगवान** इस नाम से ही पुकारते हैं। सो सिद्ध भगवान के रूप में तो नाम आता ही है।

प्रश्न – फिर भी श्रीपाल व मैनासुन्दरी का नाम नहीं आया।

उत्तर – श्रीपाल-मैनासुन्दरी तो एक गृहस्थ राजा-रानी के नाम हैं, वे नाम कैसे आ सकते थे। अरे, भाई ! इस रूप में तो आदिनाथ से लेकर महावीर तक के भी नाम नहीं हैं। फिर तो सभी के नाम आ जाते। **किसी का भी, कोई नाम आते ही तो यह सिद्ध पूजन नहीं रहती।**

प्रश्न – इस सिद्धचक्र विधान के प्रताप से श्रीपाल का कुष्ठ रोग मिट गया था। कहा जाता है कि उनकी धर्मपत्नी मैनासुन्दरी ने यह सिद्धचक्र विधान किया था, कराया था; इसके प्रताप से कोटिभट राजा श्रीपाल और उनके साथियों का कुष्ठ रोग दूर हो गया था। अत: उनकी चर्चा तो होनी ही चाहिए थी।

उत्तर : तुम ठीक कहते हो। पर सिद्धचक्र विधान पूजन की रचना करनेवाले कवि सन्तलालजी ने कहीं भी कोई चर्चा नहीं की।

यह उनकी कोई गलती है या उनकी चर्चा नहीं करने से विधान में कोई कमी रह गई है – यह सोचने के स्थान पर यह खोजना अधिक आवश्यक है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया ?

लिखकर या बोलकर तो सभी कहते हैं; पर ज्ञानी-धर्मात्मा लोग किसी विषय पर कुछ भी न लिखकर, न कहकर भी बहुत कुछ कहते हैं; उसे जानना बहुत जरूरी है; क्योंकि वह बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

यह तो हो नहीं सकता कि श्रीपाल-मैनासुन्दरी के कथानक से कवि अपरिचित हो; क्योंकि यह तो बहुचर्चित कथानक है; फिर भी **इतना बड़ा विधान लिखकर भी उनकी चर्चा नहीं करने में कुछ न कुछ कारण तो होना ही चाहिए।**

जहाँ तक मैं समझता हूँ कि सिद्धों के स्तवनरूप इतने महान कार्य को एक शारीरिक रोग की दवा के रूप में प्रस्तुत करना उन्हें इष्ट नहीं था। आत्मीक रोगों के निवारण की चर्चा तो वे करते ही हैं।

आठवीं पूजन की जयमाला में लिखा है –

तुम महामंत्र विष विघ्नजार, अघ रोग रसायन कहो सार।

आप विघ्नरूपी विष को उतारने के महामंत्र हो और **पुण्य-पापरूप रोग के** निवारण को सारभूत रसायन हो।

तीसरी पूजन की जयमाला में भी लिखा है –

जन्ममरण कष्ट को टारि अमरा भये।
जरादि रोग व्याधि परिहार अजरा भये।।

जन्म-मरणरूपी कष्ट को टालकर अमर हो गये हो और बुढ़ापा आदि रोग को दूर कर अजर हो गये हो।

उक्त पंक्तियों में पुण्य-पापरूपी आत्मिक रोग और बुढ़ापा आदि शारीरिक रोगों की बात तो आती है; पर कुष्ठ रोग की बात नहीं आती।

आपने **अपने** जरादि रोग नाश कर दिये हैं, यह तो आता है; पर आपने **दूसरों** के जरादि रोग को ठीक किया है – यह बात नहीं आती।

दूसरे के संदर्भ में जब भी कोई बात आती है तो यही आता है कि आपके गुणगान से, आपकी भक्ति से उसे लाभ हो गया। यह नहीं आता कि आपने कुछ कर दिया।

जैनदर्शन की मान्यतानुसार भगवान तो किसी का कुछ करते ही नहीं हैं; एक द्रव्य भी दूसरे द्रव्य का कुछ भी नहीं करता।

प्रश्न – श्रीपाल आदि का कुष्ठ रोग तो सिद्धचक्र मण्डल के प्रभाव से ठीक हुआ ही था। श्रीपालचरित्र में साफ-साफ लिखा है।

उत्तर – श्रीपालचरित्र में लिखा है तो अवश्य हुआ होगा। हुआ होगा नहीं, हुआ ही था; क्योंकि आगम में लिखा है। इसमें मुझे कोई शंका-आशंका नहीं है; पर एक बात है कि यह बहुत पुरानी घटना है, चौथे काल की।

इस एक घटना से हम कबतक काम चलायेंगे ? अभी कोई ताजी घटना हो तो बताइये न ?

एक बार जब मैं इस घटना की चर्चा कर रहा था तो एक डॉक्टर साहब बोले – ''अरे, भाई ! आप लोग ऐसी बातें कहने से पहले हम से तो बात कर लिया करे।''

मैंने कहा – ''क्यों, क्या बात है ?''

तब वे कहने लगे – ''कुष्ठ रोग के कीटाणु जब शरीर में प्रवेश करते हैं तो उसके बीसों वर्ष बाद पता चलता है। इसीप्रकार जब उसका इलाज आरंभ होता है तो लाभ भी बहुत धीमी गति से होता है, ठीक होने में भी बीसों वर्ष लग जाते हैं।

इसप्रकार अधिकांश कुष्ठ रोगी कुष्ठ रोग के साथ ही मरते हैं।''

मैंने कहा - ''श्रीपाल का तो तत्काल ठीक हुआ ही था।''

तब वे कहने लगे - ''यदि आपके पास ऐसा कोई मंत्र या पूजन-विधान है; जिससे क्षण भर में कुष्ठ रोग ठीक हो सकता है तो उसका प्रयोग करके बताइये। यदि ऐसा हो सका तो एक दिन में कम से कम आधा विश्व जैनी हो जायेगा।

पहले चार कुष्ठ रोग विशेषज्ञ डॉक्टर टी.वी. पर, एक मरीज का निरीक्षण करके यह प्रमाणित करें कि हाँ, यह कुष्ठ रोगी है; उसके बाद आप अपना मंत्र पढिये, पूजन-विधान कराइये, भगवान के अभिषेक का जल उन मरीजों पर छिड़किये।

जब मरीज ठीक हो जाय, कुष्ठ रोग मिट जावे, तब टी.वी. पर वे डॉक्टर पूरी तरह जाँच करके बतावें कि ये मरीज पूरी तरह ठीक हैं, इनका कुष्ठ रोग मिट गया है।

यदि परीक्षा में पास हो गये तो सारे टी.वी. चैनल नि:शुल्क रूप से दिनभर टी.वी. पर दिखायेंगे और जो देखेगा, वह जैनी बन जावेगा।

आप जानते हैं सम्पूर्ण विश्व में जितने कुष्ठ रोगी हैं, उनमें आधे से अधिक भारत में हैं। उनके नि:शुल्क इलाज और खाने-पीने रहने की सारी नि:शुल्क व्यवस्था भारत सरकार को करनी पड़ती है।

आपके इस चमत्कार से उसके तो अरबों रुपये बच जायेंगे। भारत सरकार आपको बुलाकर भारतरत्न की उपाधि से सम्मानित करेगी।''

मेरी समझ में नहीं आया कि मैं उन्हें क्या उत्तर दूँ ?

तब वे भाई साहब बोले - ''किसी को भरोसा ही नहीं है तो काम होगा कैसे ?''

मैंने कहा - ''आप बात तो ठीक ही कहते हैं; पर काम श्रद्धा से होता है या विधान से ? श्रद्धा तो हमें नहीं होगी, आपको नहीं होगी; पर क्या किसी को भी श्रद्धा नहीं है। एक करोड़ जैनियों में किसी को तो श्रद्धा होगी। इतने विद्वान, इतने साधु-संत; इन सबको भी श्रद्धा नहीं है - यह कैसे माना जा सकता है ?

समयसार में तो लिखा है कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ भी नहीं करता। न करता है और न कर सकता है।

इस बात की श्रद्धा करें या उस बात की ?''

तब वे बोले - ''हो सकता है सन्तलालजी ने इन्हीं प्रश्नों से बचने के लिए श्रीपाल-मैनासुन्दरी की चर्चा नहीं की हो ? पर आपको तो करना ही चाहिए। इससे सिद्धचक्र विधान की महिमा बढ़ती है।''

मैंने कहा - ''जिसकारण से सन्तलालजी ने चर्चा नहीं की, हम भी उसी कारण से चर्चा नहीं करते। जिस बात को सिद्ध करके न बता सकें, उसकी चर्चा करने से क्या लाभ है ?''

एक बात यह भी तो है कि तद्भव मोक्षगामी सनत्कुमार चक्रवर्ती को मुनि अवस्था में सात सौ वर्ष तक कुष्ठ रोग रहा था। यदि कुष्ठ रोग का इलाज इतना सहज व सरल है तो उन्हें इतने वर्ष तक कष्ट क्यों सहना पड़ा। क्या उस समय कोई मैनासुन्दरी जैसा नहीं था, जो सिद्धचक्र विधान करके यह काम कर देता। अरे, उनके तो एक से एक सुन्दर और धर्मात्मा ९६ हजार रानियाँ थीं। उन्होंने ऐसा कुछ क्यों नहीं किया ?

वस्तुत: बात तो यह है कि जब कोई कार्य होना होता है; तो निमित्त भी उसीप्रकार के सहज प्राप्त हो जाते हैं। श्रीपाल का कुष्ठ रोग ठीक होना था तो तदनुकूल निमित्त भी मिल गये और सनत्कुमार चक्रवर्ती का नहीं होना था तो निमित्त भी नहीं मिले।

ऐसा ही सब जगह समझ लेना चाहिए।

सिद्धचक्र विधान का असली लाभ तो भवरोग का निवारण है, जन्म-जरा-मृत्यु रोग का निवारण है।

सिद्ध समान अपने आत्मा की आराधना करने से भवरोग मिटता ही है; जन्म-जरा-मृत्यु से बचाव होता ही है।

अत: हमारा निवेदन तो यही है कि सिद्धचक्र विधान को सिद्धों के गुणगान और भक्ति तक ही सीमित रहने दें; इसे किसी बीमारी की दवाई न बनावें।

इसके बाद पूरी जयमाला चौपाई छन्दों में हैं।

पहला छन्द इसप्रकार है -

(चौपाई)

जय भविकुमुदन मोदन चंदा, जय दिनन्द त्रिभुवन अरविंदा।
भवतपकरण शरण रसकूपा, मद ज्वर जरन हरण घनरूपा।।२।।

हे सिद्ध भगवन् ! आप भव्यरूप कुमुदों को प्रफुल्लित करने के लिए चन्द्रमा के समान हो और तीन लोकरूपी कमलों को विकसित करने के लिए दिन को आनन्द देनेवाले सूर्य के समान हो। आपकी जय हो, जय हो।

कमलों की जातियाँ दो प्रकार की होती हैं - १. एक वे जिनके फूल सूर्य के उगने पर प्रफुल्लित होते हैं, खिलते हैं; उन्हें **कमल** कहते हैं और २. दूसरी वे जिनके फूल चन्द्रमा की चाँदनी में खिलते हैं, उन्हें **कुमुद** कहते हैं। **(शेष पृष्ठ 5 पर ...)**

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

सिवनी (म.प्र.) : यहाँ दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सिवनी के तत्त्वावधान में पंचबालयति जिन मंदिर में दिनांक 31 अक्टूबर से 17 नवम्बर 2013 तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन में 14 गुणस्थान के माध्यम से करणानुयोग का सुन्दरतम विवेचन एवं प्रतिपादन किया गया।

इस अवसर पर लगभग 50-60 साधर्मियों ने दोनों समय कक्षाओं का लाभ लिया तथा भविष्य में भी अन्य जैन सिद्धांतों को जानने की जिज्ञासा व्यक्त की। **– ज्ञाता सुबोध सिंघई**

शोक समाचार

(1) मुम्बई निवासी श्री प्रदीप वेलजीभाई शाह का दिनांक 24 नवम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई के छोटे भाई थे। आप 'सादा जीवन उच्च विचार' की प्रतिमूर्ति थे। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों का आप सदैव लाभ लेते थे और उसमें सक्रिय रूप से अपना योगदान देते थे।

(2) सिलवानी (म.प्र.) निवासी श्री शिखरचंदजी जैन का दिनांक 21 नवम्बर को 55 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। सिलवानी में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के आप केन्द्रबिन्दु थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक समकित शास्त्री के पिताजी थे।

(3) गुना (म.प्र.) निवासी श्रीमती अनिता जैन धर्मपत्नी डॉ. सुधीर कुमार जैन (नेत्र विशेषज्ञ) का दिनांक 5 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल जिनमंदिर में पूजन तिथि हेतु 1100/-, वीतराग-विज्ञान हेतु 500/- एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के कार्यक्रम

अब डॉक्टर भारिल्ल अधिकांश जयपुर में ही रहेंगे। उनके प्रवचन प्रतिदिन शाम को पौने आठ बजे से श्री टोडरमल स्मारक भवन में होंगे; जिन्हें लाइव www.ustream.tv/channel/ptst पर प्रसारित किया जायेगा। आप सभी स्मारक भवन में पधारकर या घर बैठे इन्टरनेट पर अवश्य सुनें। प्रातःकाल : जी-जागरण चेनल पर 6.30 से 7.00 बजे तक भी उन्हें सुना जा सकता है।

- व्यवस्थापक : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित –

दैनिक कार्यक्रम

प्रातःकाल –

5.15 से 6.15 आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का प्रवचन
6.15 से 7.00 पाठ एवं जी-जागरण पर डॉ. भारिल्ल का प्रवचन
7.30 से 8.15 विभिन्न कक्षायें
(1) नयचक्र – डॉ.संजीवकुमारजी गोधा
(2) तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 – पण्डित सोनूजी शास्त्री
(3) वीतराग-विज्ञान पाठमाला – श्रीमती कमला भारिल्ल
8.15 से 9.00 प्रवचन : पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल – प्रवचनसार
9.00 से 9.45 आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन एवं विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नमंच

सायंकाल –

6.00 से 6.45 गुणस्थान विवेचन – ब्र. यशपालजी जैन
6.45 से 7.15 जिनेन्द्र भक्ति
7.15 से 7.45 छात्र प्रवचन
7.45 से 8.30 डॉ. भारिल्ल का प्रवचन : समयसार- सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर
8.30 से 9.15 कक्षायें
(1) समयसार – पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील
(2) इष्टोपदेश – पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री
(3) भक्तामर स्तोत्र – पण्डित सोनूजी शास्त्री
(4) प्रमेयरत्नमाला – पण्डित पीयूषजी शास्त्री

नोट – जो भी साधर्मी यहाँ रहकर इन कार्यक्रमों का लाभ लेना चाहते हैं, वे कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127